SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

श्री रामचरितमानस में राष्ट्र भक्ति और राष्ट्र प्रेम पर अध्ययन

डॉ. कंचन जैन, शिक्षाशास्त्र विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय

श्री रामचरितमानस एकता एवं सद्भाव की एक महत्वपूर्ण डोर है।

- डॉ कंचन जैन

शोध सार

तुलसीदास जी द्वारा रचित महाकाव्य रामचरितमानस केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं है। यह एक गहन दार्शनिक ग्रंथ है जो भारतीय लोकाचार के सार को समाहित करता है। मुख्य रूप से भगवान श्री राम के जीवन पर केंद्रित एक भक्तिपूर्ण कार्य होने के बावजूद, यह महाकाव्य शासन, कर्तव्य और सबसे महत्वपूर्ण रूप से 'राष्ट्र' या राष्ट्र की अवधारणा के बारे में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

एक राष्ट्रवादी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में मातृभूमि के प्रति गहरे प्रेम को समाहित किया। श्री राम में चित्रित आदर्श शासक केवल एक दिव्य व्यक्ति ही नहीं है, बल्कि अपने लोगों के कल्याण के लिए समर्पित एक संप्रभु भी है। राम का चौदह वर्ष का वनवास, विपत्ति का काल, केवल एक व्यक्तिगत परीक्षा नहीं है, बल्कि एक राष्ट्र के परीक्षणों के माध्यम से एक प्रतीकात्मक यात्रा है। श्री राम की वापसी और विजय को धार्मिकता और संप्रभुता की विजय के रूप में देखा जाता है।

महाकाव्य में राष्ट्र की शक्ति के आधार के रूप में 'धर्म' या धार्मिकता की अवधारणा पर भी जोर दिया गया है। यह मानता है कि राष्ट्रीय समृद्धि के लिए न्यायपूर्ण और समतापूर्ण समाज आवश्यक है। विभीषण और सुग्रीव के चरित्र, जो शत्रु होने के बावजूद धर्म के सिद्धांतों के आधार पर राम का समर्थन करना चुनते हैं, इस विचार का उदाहरण देते हैं कि अपने राष्ट्र के प्रति वफादारी को व्यक्तिगत लाभ से ऊपर रखना चाहिए।

मुख्य शब्द - श्री रामचरितमानस, राष्ट्र प्रेम, राष्ट्रभक्ति, धार्मिक ग्रंथ, समृद्धि।

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

शोध उद्देश्य

- श्री रामचरितमानस की अवधारणा को समझना।
- श्री रामचरितमानस में समाहित राष्ट्र प्रेम एवं राष्ट्रभक्ति को समझना।

शोध प्रविधि

श्री राम चरित्र मानस एवं धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन शोध पत्र के लिए किया जाएगा।

प्रस्तावना

रामचरितमानस एकता और सद्भाव के महत्व को रेखांकित करता है। महाकाव्य में मनुष्यों से लेकर देवताओं, राक्षसों और जानवरों तक के विविध चरित्र, संघर्षों के साथ सह-अस्तित्व में हैं। हालाँकि, अंतिम समाधान सहयोग और साझा लक्ष्य में निहित है। यह भारत के बहुलवादी लोकाचार को दर्शाता है, जहाँ विविधता में एकता को त्योहार के रूप में मनाया जाता है।

तुलसीदास द्वारा रचित हिंदू साहित्य की एक महान कृति श्री रामचरितमानस एक महाकाव्य से कहीं अधिक जीवन, धर्म और सामाजिक मूल्यों पर एक दार्शनिक ग्रंथ है। इसके छंदों में देशभक्ति और राष्ट्र के प्रति प्रेम की गहन खोज निहित है, हालांकि 'राष्ट्र' की अवधारणा इसके आधुनिक अर्थ से भिन्न हो सकती है।

तुलसीदास के लिए, राष्ट्र 'धर्म' का पर्याय है। यह एक आध्यात्मिक इकाई है, एक ब्रह्मांडीय व्यवस्था है जहाँ धार्मिकता कायम रहती है। अयोध्या, श्री राम द्वारा शासित राज्य, केवल एक भौगोलिक स्थान नहीं है, बल्कि इस आदर्श राष्ट्र का प्रतीक है। इसकी समृद्धि और स्थिरता धर्म के पालन के साथ जुड़ी हुई है। जब राम को वनवास दिया जाता है, तो राज्य को नुकसान होता है, जो इस विचार को दर्शाता है कि एक राष्ट्र की भलाई सीधे उसके नेतृत्व के चरित्र से जुड़ी होती है।

देशभक्ति का मतलब कट्टरता या अंधभक्ति नहीं है। यह धर्म को बनाए रखने का कर्तव्य, जिम्मेदारी है। रामचरितमानस के पात्र, स्वयं राम से लेकर हनुमान तक, इसका उदाहरण देते हैं। राम अपने राज्य के कल्याण के लिए अपने व्यक्तिगत सुख का त्याग करते हैं। हनुमान की राम के प्रति अटूट भक्ति एक नागरिक के अपने राष्ट्र के प्रति निस्वार्थ प्रेम का रूपक है।

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

महाकाव्य में राज धर्म की अवधारणा

महाकाव्य 'राज धर्म' की अवधारणा, एक राजा के कर्तव्यों की भी खोज करता है। यह सुशासन का रेखा चित्र है, जो प्रजा के रक्षक के रूप में शासक की भूमिका पर जोर देता है। राम के शासनकाल को अक्सर एक आदर्श के रूप में उद्धृत किया जाता है, जहाँ राजा केवल प्रशासक नहीं बल्कि एक आध्यात्मिक नायक के होता है। रामचरितमानस में 'देशभक्ति' शब्द का स्पष्ट रूप से उपयोग नहीं किया गया है, लेकिन इसका अंतर्निहित संदेश स्पष्ट है। राष्ट्र के प्रति प्रेम एक धार्मिक जीवन का अभिन्न अंग है। धर्म की रक्षा करना, लोगों की सेवा करना और राष्ट्र की महानता में योगदान देना एक कर्तव्य है। इसलिए, महाकाव्य शासन और नागरिकता का एक कालातीत दर्शन प्रस्तुत करता है जो समय और भूगोल की सीमाओं से परे है।

श्री रामचरितमानस में त्याग और प्रेम की भावना

श्री रामचरितमानस, आदरणीय तुलसीदास द्वारा रचित एक महाकाव्य है, जो त्याग और प्रेम के गहन आदर्शों का एक कालातीत प्रमाण है। यह एक ऐसी कथा है जो भगवान राम, विष्णु के अवतार, और कर्तव्य और अपनी प्रजा के प्रति उनकी अटूट निष्ठा के जीवन को उजागर करती है। एक गहरे आध्यात्मिक सार से ओतप्रोत, यह महाकाव्य निस्वार्थ सेवा, करुणा और पारिवारिक प्रेम के अटूट बंधनों के गुणों का बखान करता है। श्री रामचरितमानस के केंद्र में राम की पत्नी सीता का अद्वितीय त्याग है। सामाजिक दबावों के परिणामस्वरूप उनका वनवास, अटूट प्रेम और भक्ति का एक मार्मिक चित्रण है। प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने में उनका लचीलापन और राम की धार्मिकता में उनका दृढ़ विश्वास पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का काम करता है। सीता का चरित्र भारतीय महिला के आदर्श का प्रतीक है: मजबूत, गुणी और अपने पति के प्रति हमेशा समर्पित।

श्रीराम का अपना जीवन बलिदान के धागों से बुना गया एक चित्रपट है। अपने पिता के वचन का सम्मान करने के लिए लिया गया उनका चौदह साल का वनवास, उनके कर्तव्य के प्रति अडिग भावना का प्रमाण है। सीता के प्रति अपने असीम प्रेम के बावजूद, उनके सम्मान की रक्षा के लिए उन्हें निर्वासित करने का उनका निस्वार्थ कार्य नैतिक दुविधाओं की जटिलताओं का एक मार्मिक उदाहरण है। फिर भी, इन परीक्षणों के माध्यम से ही राम एक आदर्श राजा के रूप में उभर कर सामने आते हैं, जो न्यायप्रिय, दयालु और अपनी प्रजा के कल्याण के लिए हमेशा प्रतिबद्ध रहते हैं। श्री रामचरितमानस एक नैतिक दिशा-निर्देश है। यह हमें

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

व्यक्तिगत इच्छाओं पर कर्तव्य को प्राथमिकता देने, सही के लिए खड़े होने और प्रेम और भाईचारे के बंधन को संजोने का महत्व सिखाता है। महाकाव्य की स्थायी लोकप्रियता सदियों और संस्कृतियों के पाठकों के साथ प्रतिध्वनित होने की इसकी क्षमता में निहित है, जो उन्हें त्याग, प्रेम और निस्वार्थ सेवा के मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है। श्री राम और सीता के चरित्रों के माध्यम से, तुलसीदास ने एक अमर कथा गढ़ी है जो लाखों लोगों के दिलों और दिमागों को आकार देती है। रामचरितमानस आशा की किरण बनी हुई है, जो हमें याद दिलाती है कि सबसे बुरे समय में भी, प्रेम और त्याग की शक्ति हमारे मार्ग को रोशन कर सकती है।

श्री रामचरितमानस में त्याग का वर्णन

श्री रामचरितमानस का महाकाव्य, तुलसीदास द्वारा रामायण का अवधी संस्करण है, जो त्याग के गहन उदाहरणों से भरा पड़ा है। यह निस्वार्थता की एक व्यापक ताना-बाना प्रस्तुत करता है, जहाँ पात्र अधिक से अधिक भलाई के लिए व्यक्तिगत इच्छाओं का त्याग करते हैं, जो हिंदू दर्शन के आधारशिला के रूप में 'त्याग' (बलिदान) के आदर्श को दर्शाता है।

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

इस कथा के केंद्र में स्वयं भगवान राम का सर्वोच्च बलिदान है। अपने पिता के वचन का सम्मान करने के लिए चौदह वर्षों के लिए वनवास पर गए राम व्यक्तिगत लाभ से अधिक कर्तव्य के आदर्श का उदाहरण हैं। अपार व्यक्तिगत कठिनाई के बावजूद भी धर्म के प्रति उनका अटूट पालन उनके चरित्र का प्रमाण है। उनकी समर्पित पत्नी सीता भी उनके वनवास में शामिल होती हैं, राम के छोटे भाई लक्ष्मण का बलिदान भी उतना ही गहरा है। वह राम और सीता के साथ जंगल में जाने के लिए अपने जीवन का त्याग करते हैं, जिससे भाईचारे के प्रेम की शक्ति का प्रदर्शन होता है। उनकी अटूट निष्ठा और निस्वार्थ भक्ति अनुकरणीय है।

महाकाव्य में सहायक पात्रों द्वारा किए गए बलिदानों को भी दर्शाया गया है। राम के एक अन्य भाई भरत ने उन्हें दिए गए सिंहासन को अस्वीकार कर दिया और राम की पादुकाओं को अपनी श्रद्धा के प्रतीक के रूप में धारण किया, जिससे उनका निस्वार्थ स्वभाव प्रदर्शित हुआ। यहां तक कि विरोधी पक्ष के पात्र, जैसे विभीषण, अपने भाई रावण की अवहेलना करके और धर्म के साथ जुड़कर बलिदान की अवधारणा को प्रदर्शित करते हैं।

इन पात्रों के माध्यम से, तुलसीदास आध्यात्मिक उत्थान के मार्ग के रूप में बलिदान के महत्व को रेखांकित करते हैं। इसे एक आवश्यक गुण, अहंकार पर काबू पाने और उच्च चेतना प्राप्त करने के साधन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार यह महाकाव्य एक कालातीत मार्गदर्शक बन जाता है, जो पाठकों को बलिदान के सही अर्थ और एक सद्गुणी जीवन को आकार देने में इसकी भूमिका पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है।

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

रामचरितमानस की दार्शनिक गहराई

तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य रामचरितमानस, रामायण का पुनर्कथन मात्र नहीं है। यह एक गहन दार्शनिक ग्रंथ है, जो मानवीय स्थिति, वास्तविकता की प्रकृति और आध्यात्मिक मुक्ति के मार्ग के बारे में अंतर्दृष्टि से समृद्ध है।

अपने मूल में, श्री रामचरितमानस भक्ति या भक्ति पर एक ग्रंथ है। तुलसीदास ने प्रतिपादित किया है कि ईश्वरीय साम्य का सबसे सीधा मार्ग ईश्वर के प्रति अटूट प्रेम और समर्पण है। राम, केंद्रीय चरित्र, केवल एक ऐतिहासिक राजा नहीं हैं, बल्कि सर्वोच्च सत्ता के प्रतीक हैं। राम के जीवन का वर्णन करके, तुलसीदास व्यक्तियों को उनकी आध्यात्मिक यात्रा को आगे बढ़ाने के लिए एक रोडमैप प्रदान करते हैं। कविता धर्म की अवधारणा में भी गहराई से उतरती है। यह केवल धार्मिक अनुष्ठानों के बारे में नहीं है, बल्कि इसमें धार्मिकता, कर्तव्य और नैतिक व्यवस्था शामिल है। राम धर्म को उसके शुद्धतम रूप में प्रस्तुत करते हैं, उनके कार्य मानवता के लिए एक नैतिक दिशासूचक के रूप में कार्य करते हैं। तुलसीदास इस बात पर जोर देते हैं कि धर्म का पालन व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण दोनों के लिए आवश्यक है।

रामचरितमानस मानव मानस की गहरी समझ प्रदान करता है। यह प्रेम, हानि, दुःख और मुक्ति के विषयों की खोज करता है। सीता, हनुमान और रावण जैसे चरित्र मानव अनुभव के विभिन्न पहलुओं का

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

प्रतिनिधित्व करते हैं। सीता पवित्रता और दृढ़ता का प्रतीक हैं, हनुमान भक्ति और निस्वार्थ सेवा का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि रावण अहंकार और इच्छा की विनाशकारी शक्ति का प्रतीक है।

श्री राम चरित्र मानस में राष्ट्र प्रेम और राष्ट्रभक्त

तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य श्री रामचरितमानस हिंदू आध्यात्मिकता और नैतिकता की गहन खोज है। मुख्य रूप से धार्मिक ग्रंथ होने के बावजूद, इसमें देशभक्ति और राष्ट्र के प्रति प्रेम की गहरी भावना भी समाहित है।

भगवान राम के जीवन और कार्यों के माध्यम से यह कविता सूक्ष्म रूप से लेकिन शक्तिशाली रूप से धर्म, कर्तव्य और निस्वार्थ सेवा के मूल्यों को स्थापित करती है। राम का वनवास, उनके पिता के वचन का परिणाम था, जो महान भलाई के लिए सर्वोच्च बलिदान का प्रतीक है। यह कृत्य राष्ट्र के प्रति कर्तव्य की गहन भावना का उदाहरण है, एक ऐसा विषय जो देशभक्ति की भावना से गहराई से जुड़ा हुआ है। इसके अलावा, महाकाव्य 'राजधर्म' की अवधारणा, एक राजा के कर्तव्यों का महिमामंडन करता है। भगवान राम को एक आदर्श शासक, न्यायप्रिय, दयालु और अपनी प्रजा के कल्याण के लिए हमेशा प्रतिबद्ध के रूप में चित्रित किया गया है। उनके शासनकाल को स्वर्ण युग, शांति, समृद्धि और धार्मिकता के काल के रूप में दर्शाया गया है। न्यायप्रिय और परोपकारी शासक का यह आदर्श सुशासन के लिए एक खाका तैयार करता है, जो किसी भी राष्ट्र का मूलभूत आधार है।

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

महाकाव्य विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों की यात्रा करता है, पाठकों को विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और लोगों से परिचित कराता है। सनातन धर्म की छत्रछाया में एकजुट भारत का यह चित्रण राष्ट्रीय पहचान और अपनेपन की भावना को बढ़ावा देता है।

श्री रामचरितमानस का अंतर्निहित संदेश स्पष्ट है: अपने राष्ट्र के लिए प्रेम किसी के धर्म का अभिन्न अंग है। यह एक ऐसा प्रेम है जो निस्वार्थ सेवा, धार्मिकता को बनाए रखने और सामूहिक भलाई के लिए काम करने के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। महाकाव्य, अपनी कालातीत कथा के माध्यम से, पीढ़ियों को जिम्मेदार नागरिक और समर्पित देशभक्त बनने के लिए प्रेरित करता है।

निष्कर्ष

श्री राम चरित्र मानस कर्तव्य, त्याग और अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम की भावना को प्रेरित करता है। तुलसीदास जी ने अपनी काव्य प्रतिभा के माध्यम से आध्यात्मिकता और राष्ट्रवाद के धागों को एक ऐसे ताने-बाने में पिरोया है जो पीढ़ियों को प्रेरित करता रहता है। श्री रामचरितमानस दार्शनिक अवधारणा, दुनिया की भ्रामक प्रकृति को भी छूती है। यह सुझाव देता है कि भौतिक दुनिया क्षणभंगुर है और सच्चा सुख व्यक्ति के आध्यात्मिक सार को महसूस करने में निहित है। तुलसीदास पाठकों को भौतिक दुनिया की सीमाओं को पार करने और भीतर के दिव्य से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।रामायण कई लोगों के लिए

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 2, Issue 1, October-December 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

प्रेरणा का स्रोत है, धार्मिक ग्रंथों को सम्मान और समझ के साथ पढ़ना आवश्यक है। इस लेख का उद्देश्य श्री रामचरितमानस में वर्णित बलिदान की अवधारणा का संक्षिप्त अवलोकन प्रदान करना है, तथा इसका उद्देश्य कोई धार्मिक दावा या व्याख्या करना नहीं है। श्री रामचरितमानस, अपनी आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षाओं से परे, देशभक्ति के आदर्शों का भंडार है। यह कर्तव्य, त्याग और सुशासन के सार की गहन समझ प्रदान करता है, जिससे राष्ट्र के प्रति गहरा प्रेम विकसित होता है।

संदर्भित ग्रंथ सूची

- के.बी. जिंदल (1955), *हिंदी साहित्य का इतिहास* , किताब महल, ... यह पुस्तक लोकप्रिय रूप से *रामायण* के नाम से जानी जाती है , लेकिन कवि ने स्वयं इसे *रामचरितमानस* या 'राम के कर्मों की झील' कहा है ... पुस्तक के सात सर्ग झील की ओर जाने वाली सात सीढ़ियों के समान हैं ...
- लुटगेनडॉर्फ 1991, पृ. 1.
- ग्रियर्सन, जॉर्ज अब्राहम. *भारतीय भाषाविज्ञान सर्वेक्षण, खंड 6.* पृ॰ 12.
- Subramanian 2008, पृष्ठ 19
- McLean 1998, पृष्ठ 121
- Puri & Das 2003, पृष्ठ 230
- Lele 1981, पृष्ठ 75
- Lorenzen 1995, पृष्ठ 160